गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2012-2014

मासिक
गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

golalariya_darshan@yahoo.in
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

विवाह योग्य प्रत्याशी विशेषांक

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं पत्थर हैं वो, जिसे समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 5 अंक : 7 पृष्ठ संख्या : 14 माह – 15 दिसम्बर 2013 सहयोग राशि : 100 रु.

संपादकीय

सहयोगी बन संबल प्रदान करे

''गोलालारीय दर्शन'' का **''विवाह योग्य प्रत्याशी विशेषांक''** आपके हाथो में है। इस विशेषांक के कारण समाज की गतिविधियों की जानकारी चाहकर भी आप तक नहीं पहुँचा पा रहे है।

विवाह योग्य प्रत्याशी तलाशना अब कठिन कार्य नहीं रहा है आधुनिक साधनों ने इस कार्य को काफी आसान बना दिया है देश भर में कई बड़े परिचय सम्मेलनों के द्वारा हमें जानकारियां सरलता से प्राप्त हो रही है। हमारे इस विशेषांक को समाजजनों ने काफी सराहा है जिसका परिणाम प्रस्तुत अंक में 170 बायोडाटा का प्रकाशन है प्रत्येक अभिभावक सर्वप्रथम अपने समाज में ही संबंध को प्राथमिकता देता है क्योंकि परिवार की जानकारी हमें रहती है जिससे संबंधों में प्रगाढ़ता रहती है। इस कार्य को समाज का एकमात्र मुखपत्र 'गोलालारीय दर्शन' गत चार वर्ष से जबाबदारी पूर्वक निभा रहा है जिसके आधार पर अनुमानत: 35–40 संबंध तय हो चुके है। गोलालारीय दर्शन संपूर्ण भारत के 4300 परिवारों मे से 4000 परिवारों को गत चार वर्षो से पत्रिका नि:शुल्क भेजी जा रही है इस प्रयास में निरंतरता बनाये रखने के लिए आपका सम्मानजनक आर्थिक सहयोग हमें आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान कर हमारा आत्मविश्वास भी बढ़ायेगा।

मैं अपनी बात को एक छोटी सी घटना से जोड़ना चाहता हूँ एक गाँव में एक सेठ व किसान का मकान पास–पास था, सेठ प्रतिदिन सायं को मंदिर के जाकर असली घी का दीपक लगाता था और किसान अपने घर के बाहर अंधेरी गली में तेल का दीपक लगाता था यह बात सेठ को मन ही मन परेशान करती थी। गांव में साधु के पधारने पर सेठ ने साधु से अपने मन की गुत्थी का समाधान चाहा तो साधु ने विनम्रता से स्पष्ट करा कि सेठजी आपसे अधिक पुण्य लाभ इस किसान को मिलेगा। जिसने अंधेरी गली में दीपक लगाकर राहगीरो को अंधेरे से बचाया है बात काफी सरल है। हमारे दान का आधार क्या है? हमारे दान से समाज हित में कितना लाभ हो रहा है ? हम अपने मान सम्मान के लिए अनेको संस्थाओं में दान कर रहे है परन्तु क्या हमने कभी सोचा कि हम अपने कुल (समाज) अपनी मातृसंस्था जिससे अपनी पहचान है उसके लिए कितना त्याग कर रहे है। अन्य संस्थानों को दान की गई राशि का मात्र 10% राशि भी यदि हम अपनी मातृसंस्था को प्रतिवर्ष देवे तो हमारा समाज भी समग्र जैन समाज में एक सुदृढ़ पहचान के साथ अपनी पहचान बनाकर विकास की नई परिभाषा लिख सकता है। फिर ना जाने क्या कारण है कि हम अपनी समाज से सौतेला व्यवहार कर रहे है। अन्य संस्थानों को दान देकर व उनके प्रति समर्पित रहकर हम अपने समाज से मान सम्मान पाना चाहते है सोचिए क्या यह सही है ? यदि नहीं, तो आईये सहयोग के लिए हाथ बढ़ाये गोलालारीय दर्शन को सम्मानजनक धनराशि प्रदान कर आजीवन सदस्य ग्रहण कर आर्थिक सुदृढ़ता करे ताकि यह पत्रिका निरंतर अपनी आंकाक्षाओं के अनुरुप प्रकाशित होती रहे।

जैन समाज की कई उपजातियों की पत्रिका वर्षो से प्रकाशित हो रही है जो अपने समाज की गतिविधियों व प्रतिभाओं को बढ़ावा देकर प्रोत्साहित कर रही है । हम भी इसी पवित्र उद्देश्य का पालन कर समाज सदस्यों की सामाजिक कार्यो में उनकी सहभगिता व समाज के बच्चों की प्रतिभाओं को उनका वाजिब हक दिलाना चाहते है हमारे समाज में अनेक प्रतिभायें ऐसी है जिन्हें उचित मंच नहीं मिल पाया उन्हें एक उचित मंच प्रदान कर प्रोत्साहित करना चाहते है जो आपके सहयोग से ही संभव है आपके सुझाव व शिकायते हमें सदैव सुधार के लिए प्रेरित करती रहेगी।

विवाहोत्सव की मिठास को बनाए रखें।

भारतीय परम्परा के अनुसार देव उठनी ग्यारस के साथ ही शादी विवाह के प्रसंग प्रारंभ हो जाते है। विवाह स्थलों की रौनक के साथ बाजारों में विवाह सामग्री का व्यापार बढ़ जाता है। आजकल विवाह समारोह का आयोजन व्यापार का रुप लेते जा रहा है नित्य नए नए प्रयोग हो रहे है। कोई वरमाला जमीन से सौ फीट ऊपर कर रहा है तो कोई पानी के अंदर इस रस्म का निभा रहा है। वधु का आयोजन स्थल पर आगमन इतना भव्य हो रहा है कि उपस्थित रिश्तेदार चकित हो जाते है। एक होड़ सी चल रही है हम क्या नया करे, इस नयेपन के चक्कर में विवाह की असली मिठास में कमी आ रही है। पारंपरिक रीति–रिवाजों की कमी से आत्मीय संबंधों पर असर पड़ रहा है।

'भारतीय परम्परा में विवाह दो व्यक्तियों का नहीं अपितु दो परिवारों का मिलन है'। जहाँ वर वधु के साथ परिवारों को बहुत अधिक महत्व दिया जाता रहा है पूर्व में योग्य वर वधु, अच्छा कुल, परिवार देखकर विवाह संबंध तय कर दिया जाता था। वर्तमान समय में स्थितियां अत्यंत भिन्न हो गई है विवाह का मुख्य आधार वर–वधु की योग्यता ही रह गया है। पारिवारिक स्थितियां कुल, गौत्र आदि सब गौण होते जा रहे है। वर–वधु उच्च शिक्षित है, किसी बड़ी कंपनी में कार्यरत है, अच्छा पैकेज है तो वह श्रेष्ठ माना जाता है परिवार से दूर कहीं अन्य शहर से कार्यरत है तो यह उसका बोनस गुण है। वर–वधु की व्यावसायिक योग्यता पर विशेष ध्यान देकर उनके व्यवाहारिक गुणों को दरकिनार करने से अनेको समस्याएं बढ़ रही है।

विवाह संबंधों में बढ़ती व्यवसायिक सोच का एक और दुखद पहलू यह भी है कि हर परिवार अपने बच्चों के लिए श्रेष्ठतम विकल्प का चुनाव करना चाहता है। वर–वधु अपना जीवनसाथी सुंदर, उच्चशिक्षित, अच्छा आर्थिक स्तर, बड़े शहर की पदस्थापना की सोच के साथ चयन करना चाहते है। क्या इस श्रेणी में नहीं आने वाले प्रत्याशी को विवाह का सपना नहीं देखना चाहिए? हमें विचार करना चाहिए कि छोटे नगरों में औसत शिक्षित, स्वयं का व्यवसाय करने वाले बच्चे बहुत अच्छी स्थिति में है उन्हें भौगोलिक परिवेश के कारण दोयम दर्जे का नहीं मानना चाहिए, इन नगरों में रहने वाले परिवारों के पास भी सुविधाएँ मौजूद है। जो एकल रुप से महानगरो में रहने वाले परिवारों के पास नहीं है।

सुदूर नगरों में कई बच्चे विवाह योग्य है परन्तु छोटे नगर का होने के कारण हम उन्हें नकार कर क्या हम विजातीय विवाह को बढ़ावा नहीं दे रहे है हमें इस मसले पर गंभीरता पूर्वक विचार कर योग्य हल निकालना चाहिए ताकि समाज का ताना–बाना सुदृढ़ रुप से बना रहे।

आज से वर्षों पूर्व विवाहोत्सव के आयोजन 4–5 दिवसीय होते थे जहाँ अनेकों रस्में निभाई जाती थी, समयाभाव के कारण कई रस्में विलुप्त हो गई है और कुछ प्राय: औपचारिक ही रह गई है जैसे पहले जब बारात वधु पक्ष के पहुँचती थी तो वहां पर महिलाएँ मधुर स्वर में वर पक्ष के माननीय संबंधियों को गाली गीत गाकर संबंधो का बखान करती थी और निकटतम संबंधी को हल्दी लगाकर उन पर पापड़ फोड़े जाते थे। जो अब पूरी तरह से विलुप्त ही हो गई है वर वधु को हल्दी, चंदन एवं तेल की रस्म भी मात्र एक औपचारिकता के रुप में ही निभाई जा रही है इसमें पहले जैसा उत्साह व अपनापन देखने को कम ही मिलता है।

महिला संगीत विवाह समारोह का महत्वपूर्ण अंग है परन्तु अब यह आयोजन भी फिल्मी संगीत पर आधारित होकर अपनी शालीनता खो रहा है। पुराने बन्ना–बन्नी के गीत शायद ही अब किसी को याद हो।

वधु पक्ष द्वारा पापड़ बड़ी का बुलावा और पापड़ पर दिल को छू देने वाले दोहे भेजकर एक रस्म ही नहीं निभाई जाती थी बल्कि दो परिवारों के आत्मीय संबंधों का आधार तैयार होता था आज पापड़ पर सजावट का कार्य आधुनिक फाइलों ने ले लिया है जो परम्परा को जीवित रखने का अच्छा प्रयास है। वर का जूता छुपाई, कुंवर कलुऊ पांव पखराई की रस्में वर से वधु पक्ष के रिश्तेदार का संक्षिप्त परिचय का आधार है इसी तरह वधु का ससुराल में खिचड़ी परोसना, मोचाइना व दादरे का बुलावा वधु का परिवार के लोगों से परिचय कराने का एक हिस्सा है जो अब समयाभाव के कारण छूटता जा रहा है।

विवाह रस्मों में हम सभी रिश्तेदारों का पूरा मान सम्मान बनाए रखें ताकि इस उत्सव की मिठास द्विगुणित हो जाए क्योंकि ये ही कुछ पल है जो हमारे जीवन में अमर अमिट यादें छोड़ जाते है।

हम आभारी है हमारे पत्रिका के वरिष्ठ सदस्य श्री कन्छेदीलालजी विदिशा एवं श्री शांतिकुमारजी गजंबासौदा के जिन्होंने विवाह योग्य प्रत्याशी विशेषांक निकालने हेतु हमें प्रेरित करा जिसका सुखद परिणाम आपके सम्मुख है। साथ ही उन अभिभावकों को धन्यवाद देते है जिन्होंने अपने बच्चों का बायोडाटा भेजकर हमारे प्रयास को सफल बनाने में अहम योगदान दिया ।

– श्रीमती अनुपमा जैन, सहसंपादिका

शब्दजाल प्रतियोगिता – 01 का सही हल भेजने वाले विजेताओं के नाम

कु. अनुष्का अनुराग जैन
खरगोन

ओजस अंकित जैन,
ललितपुर

रीत आशीष जैन,
इन्दौर

कु. सजिति जीतिन जैन
विदिशा

कु. सुरभि राजेश जैन
उज्जैन

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है।